उन्नत भारत अभियान की दिनांक 7 से 9 सितम्बर, 2014 को भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, दिल्ली में हुई राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाही

रविवार, दिनांक 7 सितम्बर 2014,

उदघाटन सत्र :

रविवार, दिनांक 7 सितम्बर 2014 से **उन्नत भारत अभियान** की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन आई आई टी दिल्ली के सेमिनार हाल में स्वस्थ भारत, स्वच्छ भारत, स्वावलंबी भारत और संपन्न भारत के निर्माण के लिए किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न संस्थाओं से आये प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखें। इस दौरान जैविक उत्पाद, वर्षा जल संग्रह, वैकल्पिक उर्जा स्रोत, कारीगर और ग्रामीण उद्योग, गोसंवर्धन एवं पंचगव्य - विज्ञान, शोध एवं उत्पादन तथा मूलभूत सुविधाएं आदि विषयों पर चर्चा की गई। कार्यशाला में देश के लगभग 100 गांवों में कार्यरत संस्थाओं, 50 तकनीकी संस्थाओं के प्रतिनिधियों और 50 विशेषज्ञों की मदद से ग्रामीण विकास और अन्य समस्याओं पर एक पूरी रुपरेखा बनाने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में भविष्य की नीति को लेकर कहा गया कि इस अभियान के तहत मुख्य तौर से तीन बिंदुओं पर पहल की जाएगी। पहली, ग्रामीणों की समस्याओं को तकनीकी संस्थाओं का सहयोग, इसमें आई आई टी अपनी पहल नहीं करेगा पर ग्रामिणों द्वारा बताई गई समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास करेगा। दूसरा, यह अभियान सभी ग्रामीण समस्याओं के लिए रुटेग (ग्रामीण प्रौद्योगिकी क्रिया समूह) के माध्यम से सिंगलविंडो प्रणाली की शुरुआत करेगी। इस कार्यक्रम (योजना) को देश के 100 स्थानों पर शुरु करने का भी प्रस्ताव किया गया।

उद्घाटन सत्र में आई आई टी दिल्ली के निदेशक प्रो. आर. के. शिवगांवकर ने आयोजन में उपस्थित मुख्य अतिथी तथा अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आई आई टी, दिल्ली की स्थापना 53 साल पहले विकसित देशों को आधार मानते हुए हुई थी। उन्नत भारत अभियान

का उद्देश्य है कि विकास भारत केन्द्रित हो। आई आई टी दिल्ली का परम कर्तव्य यह भी है कि विकास केवल समाज कल्याण के उद्देश्य से हो ना कि किसी को नुकसान पहुचाने के लिये।

सत्र के संयोजक प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने शिक्षित भारत, स्वच्छ भारत, सम्पन भारत निर्माण पर बल देते हुए बताया कि आज हम लोगों के लिए महत्वपूर्ण यह है कि हम सब इस कार्यशाला में उपस्थित हैं। यह दिवासीय कार्यशाला समाज और विश्व के लिए बहुत आवश्यक है। जैविक उत्पाद, जल प्रबन्धन, मूलभूत सुविधाएं, वैकल्पिक उर्जा स्रोत और कारीगर एवं ग्रामोद्योग को आगे बढ़ाने के लिए कुछ कल्पनाएं हैं, देखते हैं ये कितनी खरी उतरती है। हर मंत्रालय विकास की बात करता है परन्तु विकास नहीं दिखाई दे रहा। हम किस प्रकार सभी संस्थाओं को एक साथ लाकर विकास कर सकें इस पर विचार करने की अवश्यकता है। आज हमारी तकनीकी संस्थाओं में जो विद्यार्थी है वो केवल यह सोचता है कि कैसे विदेश जाया जाये यह गंभीर विषय है। हमने जन जन तक तकनिक पहुंचाने के लिए आई आई टी दिल्ली में ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, की नीव वर्ष 1978-1979 में रखी तथा रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप भी बनाया। हमें अब ऐसा नेटवर्क बनाना है जिसमें सभी छोटी-बड़ी संस्थाएं जुड़े। 70 प्रतिशत जनसंख्या गांव में बसती है। यदि उनकी तरफ ध्यान ना दिया गया तो समस्या उत्पन हो जाएगी।

भारत सरकार के प्रमुख वैग्यानिक सलाहकार (पी एस ए) डॉ. आर चिदम्बरम ने कार्यशाला में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि स्वस्थ भारत, स्वच्छ भारत, स्वावलंबी भारत और संपन्न भारत के निर्माण का लक्ष्य असान नहीं परन्तु युवाओं की क्षमता को देखते हुए कोई सन्देह नहीं कि हम अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। मानव विकास सूचकांक में हमारा देश पिछड़ा हुआ है। भारत की साक्षरता बिना किसी भेदभाव के 100 प्रतिशत होनी चाहिये तभी देश विकसित होगा।

इस दौरान पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी (पी टी यू) के कुलपती डॉ राजनीश अरोड़ा ने अपने भाषण में बताया कि हम सब एक ही लक्ष्य को लेकर अपने अपने स्थान पर कायम हैं पूर्व राष्ट्रपति डॉ० कलाम जी ने भारत को 2020 तक विकसित करने की बात सबके सामने रखी थी। हमें भारत को 2020 तक विकसित करना है, समय बहुत कम रह गया है। चीन, कोरिया, ताइवान की सरकरों ने एक गाँव एक उत्पाद की योजना बनाई तथा उस उत्पाद को बाजार तक लाने का भी प्रबन्ध किया जिस कारण पारम्परिक उत्पाद में वृद्धि हुई। हमें ऐसी योजना बनानी है जिससे गांव का

पैसा बाहर ना जाये, वहीं रहे साथ ही उन्नत भारत के बाद भी लगातर मूल्य संवर्द्धन की जरूरत है।

मुख्य उदबोधन के दौरान श्री संजय गंजू जी ने कहा की 1936 में गांधी जी ने कहा था कि भारत का विकास तभी होगा जब गांव विकसित होंगे परन्तु इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी गांव की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आज भी 84000 गांव में बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। भ्रष्टाचार के कारण नरेगा भी असफल रहा है। आदर्श गांव बनाने के लिये सड़क, सतत पोषणीय खेती, मजबूत संस्थागत बैकअप तथा ईमानदार मानव संसाधन गांव से ही तलाशने होंगे ताकि उन्हें रोजगार प्रदान किया जा सके।

मानव विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी जी ने इस अवसर इस अभियान को दीनदयाल उपाध्याय की जयंती से राष्ट्रव्यापी अभियान बनाने की घोषणा करते हुए कहा कि आज यह देश का दुर्भाग्य है कि उच्च शिक्षण संस्थानों और आई आई टी में पढ़ने वाले बच्चे हमारे गांवों से दूर होते जा रहे हैं और केवल विदेशों में अपना भविष्य तलाश रहे हैं। हमारे देश की प्रतिभा एक बड़े स्तर पर पलायन कर रही है यह भी एक कड़वा सच है। लेकिन इसको रोका जा सकता है। देश भर के उच्च संस्थानों में मौजूद ग्रामीण विकास विभाग इसमें एक अहम भूमिका निभा सकता है। ऐसी संस्थाएं न केवल ग्रामीण भारत से जुड़ सकती है बल्कि समस्याओं के निराकरण में भी इनकी भूमिका काफी अहम हो सकती है। स्मृति ईरानी ने आश्वासन दिया कि इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में हुई चर्चा और सहमति के आधार पर भविष्य के लिए तैयार रुपरेखा को अन्य संस्थानों के साथ कैसे जोड़ा जाए इसका प्रयास 12 और 13 सितम्बर को होने वाली कुलपतियों की बैठक के दौरान किया जाएगा। इस बैठक में देश भर के विश्वविद्यालयों के कुलपति हिस्सा लेंगे। इस कार्यक्रम को सफल बनान के लिए मानव संसाधन मंत्रालय में एक विशेष प्रकोष्ठ का निर्माण किया जाएगा जो मंत्रालय से संबंधित सभी संस्थाओं को इससे कार्यक्रम से जोड़ने का प्रयास करेगा।

आइ आइ टी, दिल्ली के बोर्ड ऑफ़ गवर्नेर्स के अध्यक्ष डॉ. विजय भटकर जी ने इस कार्यशाला को केवल एक कार्यशाला नहीं बल्कि एक संकल्प बताते हुए कहा कि आज एक ही मंच पर वैज्ञानिक, स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधि तथा गावों में जमीनी स्तर पर कार्य करने वाले सभी लोग उपस्थित

है यह बहुत सौभाग्य की बात है। हमें देश नहीं सम्पूर्ण विश्व के निर्माण की बात करनी है सभी सुखी होने चाहिये। हमारी विचारधारा पश्चिम की तरह व्यक्तिगत विकास की नहीं है। यह देख कर अच्छा लगता है कि पहली बार आइ आइ टी में गाय आधारित विकास की बात हो रही है। मैं चाहता हूं कि आइ आइ टी में भी गोशाला बने। हमारे पास आधुनिक प्रौद्योगिकी नहीं भी हो तो क्या, हमारे पास पारंपरिक ज्ञान तो है जिसका प्रयोग करते हुए उस ज्ञान को भारत से विदेश ले जाना है।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन देते हुए प्रो. वीरेन्द्र कुमार विजय ने बताया कि एक समय ऐसा था जब भारत के गांव की स्थिति ब्रिटेन से बेहतर थी। तब तो कोई आधुनिक प्रौद्योगिकी नहीं थी। हस्तशिल्प तथा कृषि से पता चलता है कि विज्ञान एवं तकनीक कितनी अच्छी थी, जिसे षड्यंत्र के तहत नष्ट किया गया। हमारे तकनीकी संस्थानों से शिक्षित छात्र विदेश ना जाकर हमारे ही गांव के लिए कार्य करें इसका प्रयास करना भी आवश्यक है।

प्रथम सत्र - जैविक उत्पाद:

उन्नत भारत अभियान का प्रथम सत्र जैविक उत्पाद पर आधारित था। इस सत्र में बहुत से जैविक उत्पादों से सम्बंधित प्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किये। जैविक उत्पाद सत्र की तकनीकी सलाहकार प्रो. सत्यवती शर्मा थी जिन्होंने जैविक उत्पाद को बढ़ावा देने पर बल देते हुए बताया कि पृथ्वी पर मनुष्य के आने से पहले भी पेड़ पौधे बिना किसी रासायनिक उत्पाद के उत्पन्न हुए फिर आज हमें इस रासायनिक उत्पाद की क्यों जरूरत पड़ी? हम अकाल से निपटने के लिये हरित क्रांति लाये जिसमें भारी मात्रा में रसायनिक पदार्थ का प्रयोग किया गया जो मिट्टी की उपजाऊ क्षमता समाप्त करता है। यूरिया, पोटास जहां बनते हैं और उपयोग किये जाते हैं दोनों ही जगह प्रदूषित हो जाती है। हमारे सामने यह भी समस्या है कि हमारे किसान जैविक के बारे में नहीं जानते केवल यूरिया के बारे में जानते हैं, जो उत्पाद हमारे देश से बाहर जाते हैं उनकी गुणवत्ता जांचने के लिए एजेंसी का निर्माण किया गया। हमारे देश के लिए ऐसी एजेंसी क्यों नहीं बनाई गयी?

मुख्य उद्बोधन देते हुए जीरो बजट प्राकृतिक खेती, हेतरामपुर-ढाबा, हनुमानगढ़, राजस्थान के श्री कृष्ण कुमार झाखड़ जी ने बताया कि यूरिया तथा अन्य रासायनिक उत्पादों के प्रयोग से केवल निवेश की मात्रा बढ़ती है उत्पादन की नहीं। हरित क्रांति की होड़ में हम धरती मां को भूल गए सोचा कुछ भी डालो धरती में पैदावार बढ़ेगी, इससे भूमि बंजर हो गयी। हमने गाय माता को भी त्याग दिया आज लोग कुत्ता घुमाना सम्मान की बात समझते हैं और गाय माता को कचरा खाने के लिए छोड़ देते हैं। हमें गाय की सुरक्षा के लिए क्लस्टर बनाने चाहिए, गाय आधारित खेती की जानी चाहिए क्योंकि गाय के गोबर और मूत्र से मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है।

मध्य प्रदेश से आए पंचवटी फाउंडेशन के श्री अतुल जैन जी ने बताया कि जब तक खेती का आधार बुनियादी था तब तक कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई परन्तु पश्चिम के प्रभावों के कारण हमने सब बर्बाद कर दिया। जैविक खेती में श्रम की आवश्यकता है पर हम श्रम करना नहीं चाहते मार्केट से जो भी तैयार वस्तु मिले उसी पर निर्भर हो गए हैं। मनरेगा ने खेती का व्यवसाय खत्म कर दिया जो कभी किसानी किया करते थे आज वो मजदूरी कर रहे हैं।

पिंगल्वाडा ट्रस्ट, अमृतसर (पंजाब) से आए श्री राजवीर सिंह जी ने कहा कि किसानों को बाजार की लूट से बचाने के लिए उनके स्थानीय स्तर पर बाजार स्थापित करने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने बताया कि इजराइल के पास पानी नहीं है वह पूरी तरह से दूसरे देशों पर निर्भर है, परन्तु कृषि के क्षेत्र में सबसे अच्छा है। हमें भी इसी प्रकार की योजनाएं बनानी होगी, जिससे पानी की बचत के साथ साथ जैविक खेती भी प्रचलित हो सके।

झांसी से आए कृषि पंडित श्री अवधेश कुमार सिंह ने बताया कि यदि कोई किसान 10 से 20 गाय की डेरी तथा गोबर गैस प्लांट स्थापित करता है तो उसे सरकार 60 से 90% तक सब्सिडी देती है। हमारे बहुत से किसान भाई इस बात से अवगत नहीं हैं यदि उन्हें इस उपलक्ष में पूरी जानकारी दी जाये और उन्हें डेरी, बायो गैस प्लांट के लिए प्रोत्साहित किया जाये तो न केवल किसान की आय में वृद्धि होगी, बल्कि गाय के गोबर से हजारों टन प्राकृतिक खाद बनाकर यूरिया का खर्च बचाने के साथ-साथ गाय का दूध बेच कर और बायोगैस प्लांट द्वारा डीजल भी बचाया जा सकता है।

वैदिक कृषि अनुसंधान केंद्र गुरुकुल करनाल से आए स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने अपनी बात कहते हुए सभा में उपस्थित सभी के समक्ष प्रश्न रखा कि हमें कैसा उन्नत भारत चाहिए? यदि कोई

बीमार हो तो उसके लिए हेलीकाप्टर आए उसकी छत पर और ले जाये उसे हॉस्पिटल या फिर ऐसा उन्नत भारत चाहिए जहां कोई बीमार ही न पड़े। इस देश को गाय की जरुरत है, गाय को बचाना मतलब मानवता को बचाना है। पिछले 50 वर्षों से यह देश रासायनिक पदार्थ खा-खा कर दूषित हो गया है।

सत्र के संयोजक श्री श्याम बिहारी गुप्ता जी ने गांधी जी को स्मरण करते हुए बताया कि गांधी जी ने कहा था - देश का विकास गांव का विकास करके होगा। गांव को बचाना है, तो गाय को बचाना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि गाय के गोबर में 400 करोड़ के लगभग सूक्ष्मजीवाणु होते हैं जिनसे वनस्पति संतुलित आहार प्राप्त करती है।

बीहटा, बुलंदशहर से आए श्री भारत भूषण त्यागी जी ने कहा कि हम धन की लालसा में अपने परंपरागत तरीकों को खो दिया। हर जगह शॉर्टकट से बस धन कमाना चाहते हैं। धरती पेड़ पोधों को समृद्ध बनाती है, पेड़ पौधे मानव को, पर मानव किसको समृद्ध बना रहा है? न तो हमारे पास ज्ञान की कमी है न कौशल की, फिर क्यों हमारा ग्रामीण क्षेत्र दुर्दशा को प्राप्त हो रहे हैं।

कनेरी मठ कोल्हापुर से आए स्वामी अदृश्य कदसिद्धेश्वर जी ने कृषि के परम्परागत जैविक तरीके पर प्रकाश डालते हुए बताया कि खराब केले, बासी फल और सब्जियां यदि 1 किलो गुड़ के साथ मिलाकर रख दी जाये फिर पानी में मिलाकर उसका छिड़काव खेतों में किया जाये तो 4000 रुपये की रासायनिक खाद के बराबर खाद बनती है। इसके अलावा स्वामी जी ने अन्य कई परम्परागत तरीकों से सभा में उपस्थित लोगों का मार्गदर्शन किया। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि हमें आधुनिक विज्ञान और परम्परागत ज्ञान दोनों तरीकों को साथ लेकर चलना है। एक दूसरे के विरोध में बोलने से भारत उन्नत नहीं होगा।

उन्नत भारत अभियान

सोमवार, दिनांक 8 सितम्बर 2014,

दूसरा सत्र - जल प्रबन्धन :

उन्नत भारत अभियान की राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन 8 सितम्बर 2014 को आई आई टी के सेमिनार हॉल में जल प्रबन्धन पर चर्चा आरम्भ हुई। प्रथम सत्र का परिचय एवं कार्यक्रम प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए आई. आई. टी दिल्ली के प्रो. ए. के. सिंह ने सतत पोषणीय जल प्रबंधन पर बल दिया। उन्होंने न केवल शहर बल्कि गांव स्तर पर भी जरुरत अनुसार पानी के प्रयोग करने की सलाह दी तथा नदी बेसिन बचाने पर भी जोर डाला।

मुख्य उदबोधन प्रेमूव कंसलटेंट, पुणे से आए श्री नीलेश कुलकर्णी जी ने दिया। उन्होंने एकीकृत जल प्रबंधन और जल उपयोग पर ध्यान देने को कहा तथा पानी के लिए स्थानीय विकेंद्रीकरण की जरूरत तथा लाभ के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि हमें पानी की देखभाल के लिए लोगों की नियुक्ति करनी चाहिए तथा उन्हें सम्मान भी देना चाहिए।

कलकता से आये श्री निर्मल अग्रवाल जी ने बताया कि उन्होंने 600 गांव का सर्वेक्षण किया जिसमें पाया कि 35-40 साल के लोगों का वजन मात्र 30 से 40 किलो ग्राम है। हमारे किसान केवल 3 से 6 महीने तक ही आय अर्जित कर पाते हैं क्योंकि उन्हें जल का अभाव है। जल की पूर्ती के लिये हमने यह तय किया कि हम किसानों से उनकी जमीन लेकर पानी रिजर्व संयंत्र का निर्माण करेंगे।

शिवगंगा समग्र ग्राम विकास परिषद्, झबुआ, मध्य प्रदेश से आए श्री हर्ष चौहान जी ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि लगभग 6 लाख गांव में स्थानीय ज्ञान को आधार मानकर जल प्रबंधन के लिए आंदोलन की जरुरत है।

लखनऊ, उत्तर प्रदेश से आये पूर्व आई पी एस ए डी जी श्री महेन्द्र मोदी जी ने बताया कि किस प्रकार हम कम स्थान का प्रयोग कर जल संरक्षित कर सकते हैं। इजराइल का उदारण देते हूए उन्होंने कहा कि इजराइल में पानी बर्बाद करना अपराध है जबकि हमारे देश में जब जैसे मर्जी पानी बर्बाद होता रहता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आई. ए. आर. आई.) दिल्ली से आए डा. मुकेश खन्ना ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने कॉरपोरेट सेक्टर के साथ मिलकर बीज बैंक बनवाये जहां से किसान उत्तम

नस्ल के बीज प्राप्त कर सकते हैं तथा पानी की समस्या से निपटने के लिये उन्होंने मध्य प्रदेश और हरियाणा में भूमिगत पाइप लाइनों का प्रयोग कर पानी की स्मस्या को दूर किया, स्थानीय संसाधनों का प्रयोग कर तालाब बनाये जिससे ना केवल पानी की कमी दूर हुई बल्कि गांव के लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए।

वनवासी कल्याण आश्रम, दादर व नागर हवेली से आई श्रीमती वर्षा करंदीकर ने दादर और नागर हवेली तथा धूलिया गांव जहां 60% से अधिक लोग कृषि पर आधारित है, वहां गड्ढे खोद कर जल संचयन के विषय में किये अपने कार्यों का विवरण दिया।

मृदा एवं जल संरक्षण विभाग के मध्य प्रदेश कृषी एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के प्रो० पी. के. सिंह ने पत्थर का प्रयोग कर नालियां व तालाब बना कर वर्षा जल संचयन करने का उपाय साझा किया तथा बोरी द्वारा कम लागत से बनाए गये जल संरक्षण का तरीका भी बताया।

राजस्थान से आए भूपेन्द्र सिंह जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि कैसे उन्होंने 185 बांध बना कर 1 लाख 70 हजार लोगों के जीवन में परिवर्तन ला दिया। लगभग 100 गांव में 300 बांध बनाए जिससे किसानों की आय एक साल में 300 करोड़ तक पहुंच गयी। इसके साथ साथ उन्होंने शराब, तम्बाकू आदि के खिलाफ जागरूकता का कार्य भी गांव में किया।

आई आई टी दिल्ली के एमेरिटस प्रोफेसर डॉ. बी एल देओपूरा जी ने एक विशेष प्रकार की शीट के विषय में बताया जिसे तालाब, जल स्रोतों में उपयोग कर रिसाव को रोका जा सकता है। अभी यह शीट पोर्टब्लेयर और महाराष्ट्र में प्रयोग की जा रही है। इस शीट की खास बात यह भी है कि इसे चूहा भी नहीं काट सकता।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए शिवगंगा समग्र ग्राम विकास परिषद्, झबुआ, मध्य प्रदेश से आए श्री महेश शर्मा जी ने बताया कि किस प्रकार हमें पानी का बचाव करना है। उन्होंने यह भी कहा कि पूरे देश में इतनी विविधता है कि हमें प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग-अलग उपाय सोचने चाहिए। हर स्थान पर हम एक ही तरीके से जल नहीं बचा सकते। न केवल जल बल्कि हमें जंगल, जमीन, जानवर सभी बचाने हैं क्योंकि गांव के विकास में इन सबकी बराबर भागीदारी है। तकनीकी संस्थानों को यह सोचना होगा कि वह अपना अपार ज्ञान गांव तक कैसे लेकर जायं। सरकार की भी काफी कमी रही है यदि सरकार समय पर अपना संसाधन उपलब्ध करा देती तो लोगो में लालच नहीं आता और भ्रष्टाचार भी नहीं बढ़ता।

तीसरा सत्र : वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत :

दूसरे सत्र के आरंभ में शिवम् सेवा सदन, मुबारिकपुर, गंगोह, सहारनपुर से आए श्री संजय जी ने मधु मक्खी पालन तथा मधुमक्खियों से पर्यावरण को होने वाले लाभ पर विचार प्रकट किए। उन्होंने मधुमक्खियों की उपयोगिता बताते हुए कहा कि मधुमक्खियों के समाप्त होने पर पांच साल में दुनिया समाप्त हो जाएगी।

प्रो. पी. एम. वी. सुब्बाराव ने सत्र परिचय एवं कार्यक्रम की प्रस्तावना देते हुए कहा कि गांव वाले सोचते हैं उर्जा सरकार देगी, हमे कोई कार्य करने की जरूरत नहीं। परंतु हमारे गांव में उर्जा पैदा करने की इतनी क्षमता है की वह आत्म निर्भर हो सकते हैं।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय (एम.एन.आर.ई) के पूर्व सलाहकार डाॅ. ए.आर.शुक्ला जी ने कहा की कोई गांव मेंं बिजली चाहता है। कोई पानी चाहता है तो कोई गाय। कोई भी गांव को सम्पूर्ण रूप से नहीं देखना चाहता। गाय आधरित खेती विदेशी ताकतों के हस्तक्षेप के बाद खत्म हो गई। हमारे गांव में उर्जा बनाने के लिए प्रयाप्त साधन उपलब्ध है आवश्यक्ता है तो मात्र उनके प्रयोग की।

डाॅ. अशोक दास जी ने कहा की हमे वृक्षारोपण की भी आवश्यकता है जिससे प्रकृति का संतुलन बना रहे। सौर उर्जा से केवल लाइट मिलती है पावर नहीं इसलिए हमे स्थानीय स्तर पर ग्रीड बनाने चाहिए। गांव में कौशल की कमी नहीं धन की समस्या है।

आई. आई. टी. मुम्बई से आए प्रो. गिरीश केदारे ने नए चूल्हे विकसित करने के उनके सपने पर प्रकाश डाला। उनका कहना था की गांव की महिलांए ऐसा चूल्हा चाहती हैं जिसमें धुआं न हो और न ही लकड़ी इकट्ठी करनी पड़े। तो हम ऐसे चूल्हें विकसित कर रहें हैं जो महिलाओं की यह समस्या सुलझा सकें।

विवेकानंद केंद्र से आए डाॅ. जी. वासुदेव एकीकृत उर्जास्त्रोत निर्माण करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा गांव के स्तर पर सौर उर्जा से चलने वाले चूल्हे तैयार करने पर विचार किया।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय (एम.एन.आर.ई) से आए डाॅ. पी धमीजा ने आंकड़ों का सच सामने रखते हुए बताया की 700 मिलियन लोग बिना बिजली के रह रहे हैं। हमने उनकी जरूरतों के अनुसार स्थानीय स्तर पर ही उनके लिए उर्जा उत्पन्न करने का कार्य किया है।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय (एम.एन.आर.ई) से ही डाॅ. बी.एस. नेगी ने कृषि के विकास एंव शोध की अनुसंधान की जरूरत बताते हुए स्थानीय स्त्रोत द्वारा उत्पन्न करने को कहा। पर्यावरण के अनुकूल कुक स्टोव बनाने के लिए उनके द्वारा संकल्प किया गया।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय. से आए डाॅ. वाई. के यादव ने बताया कि 20 प्रतिशत शहर 80 प्रतिशत बिजली उपयोग कर पाते है हमें इस असमानता को मिटाना है।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय की पूर्व अधिकारी सुश्री रूची जैन ने ग्रामीण विकास के लिए ग्रामीणों को प्रशिक्षण देने की सलाह के साथ-साथ रोजगार के अवसर प्रदान करने को भी कहा।

बायोएनर्जी सेल के डाॅ. अलोक भार्गव ने घरेलू उर्जा की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए स्वास्थय और शिक्षा के लिए भी कार्यान्वयन प्रशासन की स्थापना करने को कहा। उनका कहना था कि लागत प्रभावी समाधन प्रदान करना अति आवश्यक है।

डाॅ. त्रिवेदी ने कहा कि हमे केवल उन्नत भारत नहीं बल्कि उन्नत अखंड भारत बनाना है। 25 साल पहले भी हम वैकल्पिक उर्जा की बात करते थे और आज भी कर रहें हैं परंतु हमारी सोच केवल पश्चिम विचारधारा की हो गई है।

डाॅ.एस. वी अग्निहोत्री, सेक्रेटरी (कोआर्डिनेशन), कैबिनेट सचिवालय, भारत सरकार ने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान बताया की चेन्नई में यदि आप वर्षा जल संचयन नहीं करते तो आपको सीवेज कनेक्शन नहीं दिया जाएगा। आज भी हमारे देश में 8 करोड़ लोग रोशनी के लिए मिट्टी के तेल पर निर्भर हैं। यह व्यक्तिगत लड़ाई है इसलिए हम सब को साथ रहकर समस्या का समाधन ढूंढना है।

चौथा सत्र : कारीगर एंव ग्रामोद्योग :

प्रो. एस. के. साहा ने तीसरे सत्र कारीगर एंव ग्रमोद्योग का परिचय एंव कार्यक्रम प्रस्तावना देते हुए कहा कि हमारे साथ बहुत सारे एन जी ओ जुड रहें हैं यह देख कर अधिक प्रसन्नता हो रही है। हम यह कल्पना करते हैं कि उन्नत भारत अभियान की इस कार्यशाला द्वारा हम निर्णायक परिणाम तक पहुंचेगें।

सत्र का मुख्य उद्बोधन मगन संग्रहालय, वर्धा से आई डाॅ. विभा गुप्ता जी ने देते हुए कहा की 23 करोड़ लोग भूख से मरने की कगार पर हैं। इन 23 करोड़ लोगों तक खाना पहुंचाना है। प्रत्येक स्थान पर स्थानीय स्तर पर डाटा इकट्ठा करने की आवश्यकता है, जिससे पता चले कि कौन-कौन वहां रहता है? कितने कारीगर है? प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय लोगो को अधिकार होना चाहिए तथा हमें विदेश समान न लाकर स्थानीय लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिए। उन्हें औजार और मशीने अनुवृत्ति पर उपलब्ध करानी होगी। उन्होंने यह भी कहा कि टाटा, बिरला को कुछ चीजें बनाने की अनुमति न देकर स्थानीय लोगों से ही बनवाना आवश्यक है।

रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप, आई. आई. टी खड़गपुर से प्रो. प्रताप भानु सिंह भदौरिया जी ने प्रोद्यौगिकी उन्नयन, गैर सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करने तथा गांव तक निशुल्क पानी पहुंचाने के लक्ष्य को अपने मुख्य उद्बोधन द्वारा बताया। इसके साथ-साथ उन्होंने दोहरी फाइबर चिमटा, एकीकृत चावल निकालने की मशीन आदि तकनीकी के विकास की चर्चा भी की।

रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप, आई. आई. टी. गुवाहाटी से आए श्री विभूति रंजन भट्टाचार्य जी ने विक्रेताओं के लिए संशोधित साइकिल विकसित करने को कहा ताकि विक्रेता साइकिल का प्रयोग बिना थके कर सके और 150 रूपये प्रति दिन बचा सकें।

डाॅ. संतोष सत्या ने खेती से पैदा होने वाले जहरीले उत्पाद से होने वाली हानि पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने जंक फूड के बढ़ते प्रभाव को लेकर कहा की आज जंक फूड हर जगह फैल गया है। जिसका सेवन करने पर विटामिनों की कमी तथा अन्य कई रोगों का सामना करना पड़ता है। हमें जैविक खेती तो करनी हैं ताकि स्वस्थय रह सकें परंतु भंडारण में कीटनाशकों का प्रयोग से भी बचना है।

मधुमक्खी विकास केंद्र, वर्धा के डाॅ. गोपाल पालीवाल ने शहद में होने वाली मिलावट पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमें मधुमक्खी को बचाना है। उनका कहना था की हथियारों की कमी के कारण आदिवासी परम्परागत तरीकों से शहद निकालते है जिससे मधुमक्खियां मारी जाती है। हमें उन्हें प्रशिक्षण देना चाहिए क्योंकि मधुमक्खियां हमारे पर्यावरण के लिए आवश्यक है।

वेधा, नागपुर, महाराष्ट्र से आए श्री सुनीलजोशी जी ने हरा बांस से हस्तशिल्प बनाने के प्रशिक्षण हेतु वेधा संस्था के बारे में बताया। उनका कहना था कि पूर्वोत्तर में बांस का व्यापार खत्म होता जा रहा है जिसे बचाने के लिए कारगर कदम उठाने चाहिए।

दस्तकारी हाट समिति नयी दिल्ली की श्रीमती जया जेटली जी ने बताया कि आज सम्पूर्ण विश्व हमारे देश में अपना माल बेच रहा है, परंतु हम न माल बेच रहें है और न बना रहें हैं। हमे विश्व को अपना हुनर दिखाना है, जिसके लिए यह आवश्यक है की आई. आई. टी जैसे संस्थान छोटे स्तर के कारीगरों से मिले तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करें।

पांचवा सत्र - मूलभूत सुविधाएं :

सत्र के संयोजक प्रो. सनत मोहंती जी ने स्वास्थय, स्वच्छता और जल की गुणवत्ता के विषय में अपना वक्तव्य दिया तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी सुविधाएं, बाजार कौशल, विकास के लिए प्रशिक्षण केंद्र आदि उपलब्ध कराने पर भी विचार प्रकट किए।

आरोग्य भारती हिमाचल प्रदेश से आए डाॅ. राकेश पंडित जी ने मुख्य उद््बोधन देते हुए गांव-गांव का कंप्यूटीकरण करने की बात कहीं। उनका मानना है कि इससे ग्रामीण इलाकों में बेहतर शिक्षा और स्वास्थय सुविधाओं का लाभ पहुंचाया जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने गांव में बाजार उपलब्ध कराकर ग्रामीणों के शोषण को रोकने की बात भी कही।

डाॅ. ए.के. सेन गुप्ता ने बताया कि हमारा प्रयास एक ऐसी प्रयोगशाला गांव स्तर पर स्थापित करना है जहां पानी की गुणवत्ता को जांचा जा सके तथा गंदे पानी द्वारा फैल रही बीमारियों की रोकथाम के लिए कदम उठाए जा सकें।

विज्ञान प्रसार के श्री रघुवंशी जी ने बताया की ज्ञान के मामले में देश के गांव के छात्र शहर के नीजि विद्यालयों से अधिक आगे हैं क्योंकि उन्हें ज्ञान मिला है शिक्षा नहीं। हमें गांव-गांव तक ज्ञान का प्रसार करना चाहिए शिक्षा का नहीं।

आश्रम गोलोक, ओरछा, झाँसी के डाॅ. राजीव भगवन ने बताया की विवेकानंद जी हमें खेत पर शिक्षा उपलब्ध कराना चाहते थे। आधुनिक विज्ञान उस विज्ञान से अधिक उपयोगी हो गया जिसने बिना धरती को सताए विकास किया। हमें शोध के तरीकों को बदलना होगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन मध्य प्रदेश कृषि एवम प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के डाॅ. परवेन्द्र दशोरा ने दिया जिसमें उन्होंने कहा की हमारा लक्ष्य एक है जिसके लिए आज हम सब यहां आए हैं। मुझे लगता है केवल गांव नहीं हमारे शहर भी समर्थ नहीं है। मैं इस कार्यशाला की तुलना भारत की संसद से करता हूं जहां हर तरह के लोग एकत्रित होते हैं।

मंगलवार, दिनांक 9 सितंबर, 2014.

विशेष सत्र - कार्यक्रम के क्रियान्वयन की विधि

भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के सेवानिवृत प्रोफेसर प्रो. पी. एल. धर ने तकनीकी का गांव तक न होना उन्नत भारत की राह में सबसे बड़ा रोड़ा करार दिया। उन्होंने तकनीकी के उपयोग पर जोर दिया।

विकास भारती से आए श्री अशोक भगत ने बताया कि सामाजिक संस्थाएं दम तोड़ रही है। हमे गैर सरकारी और सरकारी शब्द का अन्तर समाप्त करना चाहिए क्योंकि लोकतंत्र में सब बराबर हैं। उनका मत था कि लोकसभा, विधानसभा से उंची ग्राम सभा है।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट से आए श्री गोपाल भाई जी ने उन्नत भारत के लिए ग्रामीण जनों की समस्याओं के निवारण में तकनिकी के उपयोग पर आधारित एक सुन्दर गीत के द्वारा प्रतिभागियों का मन मोह लिया । उन्होंने आदिवासियों की जमीन उन्हें लौटाने तथा उन्हें सड़क, पानी, बिजली आदि मुहैया कराने की बात पर अपना वक्तव्य केंद्रीत रखा। उन्होंने

वनवासी इलाकों से मानव तस्करी पर रोक लगने की बात को भी रखा। उनका कहना है कि इस कार्य के लिए अच्छी संस्थाओं और व्यक्तियों का चयन करना आवश्यक है।

नव एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय के पूर्व सलाहकार डाॅ. ए. आर. शुक्ला ने अक्षय उर्जाक्रंाति और जैविक खेती के माध्यम से बदलाव लाने तथा गौशाला को उर्जा केन्द्र का हिस्सा बनाने की बात कही । उन्होंने गौशाला में गाय के साथ-साथ अन्य जीव जंतु को रखे जाने के मत का भी समर्थन किया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, एन.ए.आइ.पी. से आए ए.पी. श्रीवास्तव ने मध्य प्रदेश में कचरे से उर्जा बनाने के अपने कार्यक्रम के उपलक्ष्य में बताया। उन्होंने ग्राम केन्द्रित कमेटियां बनायी और लोगों के पास जाकर उनकी समस्याओं का समाधन भी किया।

मध्य प्रदेश कृषि एवम प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के श्री बी.पी. नंदवाना ने कहा की यहां आने वाले सभी विचारों को एकाकृति कर स्थानीय जरूरतों के हिसाब से जरूरी बदलाव किए जांए। बुनियादी ढंाचे कहीं पर ठीक है कहीं पर नहीं, कहीं तकनीकी अच्छी है कहीं नहीं, इसलिए हर जगह के लिए अलग-अलग योजनांए बनाई जाए।

रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप,आई आई टी मुम्बई से आए डाॅ.आनंद बी राव ने केन्द्रीय वैकल्पिक उर्जा संस्थान खोलने का विचार प्रस्तुत किया तथा दबे हुए लोगों को उभारने की योजना भी बनाने का सुझाव दिया।

अध्यक्षीय उद्बोधन श्री बजरंग लाल जी का था जिन्होंने कहा कि हम भारत को सरकार से चलाना चाहते हैं या आई आईटी से? हमें हिन्दुस्तान को आई आईटी नहीं सरकार पर आधरित करना है, हमारी तकनीकी पहले अब से अच्छी थी, दिल्ली का लोह स्तम्भ उसी का प्रमाण है।

दोपहर सत्र - कार्यक्रम के क्रियान्वयन की विधि जारी....

एम गिरीश ने उन्नत भारत अभियान के तीसरे दिन का प्रथम सत्र आरंभ करते हुए कहा बहुराष्ट्रीय कंपनियां देश में रसायनिक उत्पादों का जाल बिछा रहीं है। परंतु स्वंय उनसे उत्पादन नहीं कर

रही हैं। धूपबत्ती से शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है। परन्तु गाय के गोबर से बनी धूप शरीर को हानि नहीं पहंुचाती, हमंे गाय आधारित विज्ञान को केन्द्र बनाना है।

अली अंसारी जी ने गांधी जी के ग्राम स्वराज के सपने को साकार करने के लिए बुनकरी समाज के लिए विशेष प्रावधानों का उल्लेख किया।

मनीपुर से आयी इंदिरा देवी ने फाईबर द्वारा विभिन्न उत्पादों तथा पर्यावरण के लिए उपयोगी कारको का वर्णन करते हुए आधुनिक प्रोद्यौगिकी आदि की आवश्यकता पर जोर दिया।

बस्तर से भूपेश तिवारी ने गांव में तकनीकी, गाय विज्ञान और धन उपलब्ध कराने पर विचार प्रस्तुत किए। उनका कहना था कि गांव के कारीगरों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराना चाहिए ताकि वह शहर जाकर दूसरो के रोजगार का अतिक्रमण न करें।

महिमा खातून ने नारी शिशु कल्याण केन्द्र महिलाओं के लिए प्रशिक्षण, कौशल विकास तथा बैंक से उन्हें ऋण तक दिलाने की आवश्यकता के बारे में बताया।

पंकज कुमार सिंह जी ने कहा कि पिछले कुछ दशकों के दौरान हम अपनी लौह निर्माण पद्धति को भूल गये हैं और हमारी विदेशी तकनीक पर निर्भता बढ़ी है। हमें आदिवासियों से जानकारी लेकर पुरानी पद्धति को दुबारा जीवित करना चाहिए।

लोक कार्यक्रम एवं ग्रामीण प्रोद्योगिकी विकास परिषद् (कपार्ट) के निदेशक श्री एम. एल गुप्ता ने बताया की पहले गांव अपनी जरूरते स्वयं पूरा किया करते थे परंतु अंग्रेजों ने सब नष्ट कर दिया। अंग्रेजों ने हमारी परंपरा समाप्त कर बिचोलियों की प्रथा आरंभ की।

सिद्धांत नाथ सिंह जी ने कहा की गांव के कारीगरों को प्रोत्साहन करने के लिए योजना बद्ध तरीके से कार्य करना चाहिए।

ग्रामीण विकास एवं प्रोद्योगिकी केन्द्र, आई आई टी दिल्ली के प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद ने सत्त पोषणीय विकास करने तथा उसके लिए केन्द्रीय माडल बनाने पर जोर दिया। इसीलिए आई आई टी और एन आई आई टी ने सोचा कि हमे भी उन्नत भारत के लिए कार्य करना चाहिए। प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद ने कहा की यह कार्यक्रम मेरी कल्पना से अधिक सफल है। मुझे रणनीति की चिंता नहीं

करनी पड़ रही है। सारे सुझाव अपने आप आ रहे हैं। आई आई टी को हमारी गांव की तकनीक से बहुत कुछ सीखना है। हमने आगे बढ़ने की लालसा में अपने लक्ष्य को दूर छोड़ दिया, जिसे हमें प्राप्त करना ही होगा।

मध्य प्रदेश विज्ञानं एवं प्रोद्योगिकी परिषद् ,भोपाल के डॉ. पी के वर्मा जी ने बताया की उनका संस्थान आदिवासियों के मध्य उनकी जरूरतों के अनुसार कार्यरत है। गांव का पूरा डाटा बनाकर हमने गांव की सभी जरूरतों को समझा और जंगल, कृषि भूमि, उद्योग भूमि आदि की चारदिवारी कर विकास के लिए योजनांए बनाई है।

झारखंड से श्रीमती शालिनी जी ने बताया की हमारी इस चर्चा में लगभग हमने सभी विषयों पर चिंतन किया है परंतु महिला एंव बाल के लिए कोई चर्चा नहीं की गई। भविष्य में हमें कुछ उत्पादों को बाजार से भी जोड़ना है, इस बात की भी चर्चा की जानी चाहिए।

समापन सत्र

श्री श्याम बिहारी जी ने जैविक उत्पाद सत्र का निष्कर्ष निकालते हुए कहा की 125 करोड़ लोगों को जहर मुक्त भोजन देने के लिए गाय आधारित खेती ही शून्यबजट खेती है। इससे किसान स्वास्थय के साथ-साथ मुनाफा भी कमा सकते हैं।

जल प्रबंधन के संयोजक श्री प्रकाश कामत जी ने वर्षा जल प्रबंधन, पानी गुणवत्ता जांचने के लिए स्थानीय स्तर पर संसाधन जुटाने को कहा।

कारीगर एवं ग्रामोद्योग सत्र के संयोजक श्री बसंत जी ने प्रशिक्षण हेतु संस्थान खुलवाने, गांव के सम्पूर्ण संसाधनों का एक बहिखाता खुलवाने, प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र, आई आई टी जैसे कृषि विद्यालय और कारीगरी एवं ग्रामोद्योग से जुडी सभी समस्याओं का हल निकाले के लिए एक नया मंत्रालय बनाने की मांग रखी।

श्री कृपा प्रसाद सिंह जी ने ग्राम विकास पर कार्य करने वाली संस्थाओ को आमंत्रित कर कहा कि वह उन्नत भारत अभियान की सफलता में भागीदार बने। गौवंश संवर्धन करने और जैविक उत्पादों को प्रोत्साहन देने का भी उन्होंने जिक्र किया।

बंगलौर से आए डाॅ. एच आर नागेन्द्र जी ने विवेकानंद के विचारों पर आधारित संस्थानों के बारे में बताया। जिनके माध्यम से पूर्वोत्तर व अन्य क्षेत्र में आदिवासियों के चरित्र निर्माण का कार्य होता है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के विशेष दूत के तौर पर आयी संयुक्त सचिव एवं कपार्ट की महानिदेशक श्रीमति विजया श्रीवास्तव जी ने सरकार से उन्नत भारत अभियान की सिफारिश कर पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी, राज्यमंत्री डाॅंजितेन्द्र सिंह ने विज्ञान के राजनीतिकरण पर चिंता जताई तथा विज्ञान और प्रोद्योगिकी मंत्रालय की तरफ से आई आई टी, दिल्ली में एक विशेष प्रकोष्ठ बनाए जाने की भी घोषणा की।

माननीय कृषि मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह जी ने कहा की हम उन्नत भारत अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प ले रहें हैं। इसका आयोजन 67 सालों बाद हो रहा है यह शर्म की बात है। उन्होंने जैविक उत्पादन के लिए झारखंड और असम में भारतीय जैविक संस्थान बनाने की भी घोषणा की।

राज्यसभा सांसद श्री बसवराजपाटिल जी ने कहा की यह बहुत दुर्भाग्य की बात है की मानव संसाधनों का प्रयोग नहीं हो रहा है । गांव के लोग भी मजबूरी में गांव में रह रहें हैं यदि मौका मिले तो वो भी शहर जाना चाहते है। गौ की सेवा ही कृषि की सेवा है आजादी से पहले इंसानो से ज्यादा गौ थी, लेकिन आज 8-9 लोगों पर 1 गाय है।

मूलभूत सुविधओं के संयोजक डॉ० राकेश पंडित जी ने ग्राम स्तर पर उन्नत भारत केन्द्र खोले जाने, शिक्षा, स्वास्थय आदि सुविधाओं का कंप्यूटरीकरण करने का सुझाव दिया।

सभी को धन्यवाद के पश्चात् कार्यशाला संपन्न हुई ।